हिन्दी
शाब्द-बोध

डॉ० ललित कुमार मण्डल
एम०ए०, एम०फिल०, पीएच०डी०,
नेट, बी०एड०

एङ्ग्लो इण्डियन पब्लिकेशंस

प्राक्कथन

विश्व की प्राचीनतम भाषा एवं भारत की अनेक भाषाओं की जननी 'संस्कृत' से उत्पन्न 'हिन्दी' आज हमारी राष्ट्रभाषा [जन-जन की भाषा] के रूप में समादृत है। परन्तु, दु:खद बात यह है कि हिन्दी के अक्षरों तथा शब्दों से सम्बन्धित समस्त एवं सम्यक् ज्ञान कराने वाली पुस्तकों का नितान्त अभाव है। मैंने संयुक्त-अक्षरों के ज्ञान के अभाव में अनेक छात्रों और व्यक्तियों को 'विद्यालय' का उच्चारण 'विधालय' करते हुए तथा 'विधालय' और विघालय' लिखते हुए सुना एवं देखा है। प्रकृत पुस्तक इस अभाव की पूर्ति करती हुई व्यञ्जन-वर्णों तथा संयुक्त व्यञ्जन-वर्णों के साथ मात्राओं के प्रयोग एवं उच्चारण-प्रक्रिया [विधि] को बताती हुई समग्र-रूप से आक्षर-बोध और शाब्द-बोध कराती है।

लेखक
डॉ॰ ललित कुमार मण्डल

विषय-सूची

1. वर्णमाला 1–3
2. स्वर-वर्ण की मात्राएँ 4–5
3. वर्ण-विन्यास एवं वर्ण-विच्छेद 6–7
4. बिना मात्रा वाले शब्द 8–10
5. 'आ' की मात्रा वाले शब्द 11–13
6. 'इ' और 'ई' की मात्रा वाले शब्द 14–16
7. 'उ' और 'ऊ' की मात्रा वाले शब्द 17–20
8. 'ऋ' और 'ॠ' की मात्रा वाले शब्द 21–23
9. 'ए' और 'ऐ' की मात्रा वाले शब्द 24–27
10. 'ओ' और 'औ' की मात्रा वाले शब्द 28–30
11. ' ं ', ' ँ ' और ':' वाले शब्द 31–33
12. संयुक्त व्यञ्जन-वर्ण वाले शब्द 34–38
13. 'र्' प्रयोग वाले शब्द 39–41
14. लिङ्ग और वचन 42–44
15. फिर से चूहा बन जाओ 45
16. हिमालय [कविता] 46

वर्णमाला 1

'वर्ण' [अक्षर] मुख [मुँह] से उच्चरित होने वाली उस मूल ध्वनि को कहते हैं, जिसका खण्ड [टुकड़ा] नहीं हो सकता है। जैसे–अ, आ, क्, ख्, य्, व्, ह् आदि।

वर्ण मुख्य रूप से तीन प्रकार के हैं–

1. स्वर-वर्ण
2. अयोगवाह-वर्ण तथा
3. व्यञ्जन-वर्ण

'अयोगवाह-वर्ण' सदैव स्वर-वर्ण में ही प्रयुक्त होते हैं।

शुद्ध व्यञ्जन-वर्ण की पहचान होती है–हलन्त चिह्न [्]।

वर्णों [अक्षरों] के क्रमशः व्यवस्थित समूह को 'वर्णमाला' कहा जाता है।

1. स्वर-वर्ण

अ   आ   इ   ई   उ   ऊ   ऋ   ॠ   ए   ऐ   ओ   औ

2. अयोगवाह-वर्ण

ं	[अनुस्वार]
ँ	[अनुनासिक, चन्द्रबिन्दु]
ः	[विसर्ग]

3. व्यञ्जन-वर्ण

क्	ख्	ग्	घ्	ङ्			[कवर्ग] [कण्ठ्य][1]
च्	छ्	ज्	झ्	ञ्			[चवर्ग] [तालव्य]
ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	ड़	ढ़	[टवर्ग] [मूर्धन्य]
त्	थ्	द्	ध्	न्			[तवर्ग] [दन्त्य]
प्	फ्	ब्	भ्	म्			[पवर्ग] [ओष्ठ्य]
य्	र्	ल्	व्				[अन्तःस्थ]
श्	ष्	स्	ह्				[ऊष्मा]
↓ तालव्य	↓ मूर्धन्य	↓ दन्त्य					

1. इन वर्णों का उच्चारण 'कण्ठ' से होता है, इसीलिए ये 'कण्ठ्य' [कवर्ग] वर्ण कहलाते हैं। इसी प्रकार 'तालु' से उच्चरित 'तालव्य' [चवर्ग], 'मूर्धा' से उच्चरित 'मूर्धन्य' [टवर्ग], 'दन्त' से उच्चरित 'दन्त्य' [तवर्ग] और 'ओष्ठ' [होंठ] से उच्चरित 'ओष्ठ्य' [पवर्ग] वर्ण कहलाते हैं।

संयुक्त व्यञ्जन-वर्ण

एक से अधिक व्यञ्जन-वर्णों के आपस में मिलने से बने हुए वर्ण 'संयुक्त व्यञ्जन-वर्ण' कहलाते हैं; जैसे–

क्ष् त्र् ज्ञ् द्य् द्व् द्ध् ङ्क् श्र् ह्न् ह्र्
च्च् च्छ् ञ्च् त्त् त्त्व् ....

क्ष्	–	क् + ष्	न्द्र्	–	न् + द् + र्
त्र्	–	त् + र्	श्र्	–	श् + र्
ज्ञ्	–	ज् + ञ्	ह्न्	–	ह् + न्
द्य्	–	द् + य्	ह्र्	–	ह् + र्
द्व्	–	द् + व्	ह्म्	–	ह् + म्
द्ध्	–	द् + ध्	ह्य्	–	ह् + य्
द्घ्	–	द् + घ्	च्च्	–	च् + च्
ङ्क्	–	ङ् + क्	च्छ्	–	च् + छ्
ङ्ग्	–	ङ् + ग्	ञ्च्	–	ञ् + च्
त्त्	–	त् + त्	द्द्	–	द् + द्
ठ्य्	–	ठ् + य्	त्त्व्	–	त् + त् + व्
द्भ्	–	द् + भ्	ड्ड्	–	ड् + ड्
द्ग्	–	द् + ग्	क्त्	–	क् + त्

स्वर–वर्ण की मात्राएँ 2

स्वर-वर्ण			मात्राएँ [चिह्न]	[कहाँ प्रयुक्त होती है?]
[ह्रस्व]	अ	–		[नहीं होती है।]
[दीर्घ]	आ	–	ा	[बाद में]
[ह्रस्व]	इ	–	ि	[पहले]
[दीर्घ]	ई	–	ी	[बाद में]
[ह्रस्व]	उ	–	ु	[नीचे]
[दीर्घ]	ऊ	–	ू	[नीचे]
[ह्रस्व]	ऋ	–	ृ	[नीचे]
[दीर्घ]	ॠ	–	ॄ	[नीचे]
[दीर्घ]	ए	–	े	[ऊपर]
[दीर्घ]	ऐ	–	ै	[ऊपर]
[दीर्घ]	ओ	–	ो	[बाद में]
[दीर्घ]	औ	–	ौ	[बाद में]
अयोगवाह		–	ं	[ऊपर]
		–	ँ	[ऊपर]
		–	ः	[बाद में]

जब व्यञ्जन-वर्ण में **'स्वर-वर्ण'** जोड़ा जाता है, तब इन मात्राओं [चिह्नों] का ही प्रयोग किया जाता है और मात्राओं का उच्चारण **'कार'** शब्द जोड़ कर किया जाता है। जैसे–

ा → 'आ'–कार;
ि → ह्रस्व 'इ'–कार;
ू → दीर्घ 'ऊ'–कार;
ै → 'ऐ'–कार आदि।

वर्तनी [हिज्जे] की उच्चारण-विधि

'क्' में 'अ'	–	क [क् + अ]
'क्' में 'आ'-कार	–	का [क् + आ]
'क्' में ह्रस्व 'इ'-कार	–	कि [क् + इ]
'क्' में दीर्घ 'ई'-कार	–	की [क् + ई]
'क्' में ह्रस्व 'उ'-कार	–	कु [क् + उ]
'क्' में दीर्घ 'ऊ'-कार	–	कू [क् + ऊ]
'क्' में ह्रस्व 'ऋ'-कार	–	कृ [क् + ऋ]
'क्' में दीर्घ 'ॠ'-कार	–	कॄ [क् + ॠ]
'क्' में 'ए'-कार	–	के [क् + ए]
'क्' में 'ऐ'-कार	–	कै [क् + ऐ]
'क्' में 'ओ'-कार	–	को [क् + ओ]
'क्' में 'औ'-कार	–	कौ [क् + औ]
'क्' में अनुस्वार 'ं'	–	कं [कम्]
'क्' में चन्द्रबिन्दु 'ँ'	–	कँ [कङ्]
'क्' में विसर्ग ':'	–	कः [कह्]
'ह्' में 'ऋ'-कार	–	हृ

वर्ण-विन्यास एवं वर्ण-विच्छेद 3

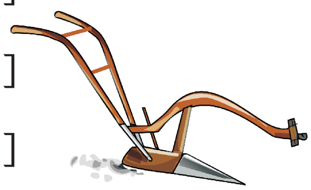
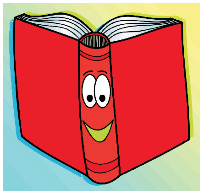

वर्ण-विच्छेद [वर्ण-वियोजन]	वर्ण-विन्यास [वर्ण-संयोजन]			
घ् + अ + र् + अ	[4 वर्ण]	–	घर	[शब्द]
ह् + अ + ल् + अ	[4 वर्ण]	–	हल	[शब्द]
क् + इ + त् + आ + ब् + अ	[6 वर्ण]	–	किताब	[शब्द]
ई + श् + अ	[3 वर्ण]	–	ईश	[शब्द]
अ + ं + ग् + ऊ + र् + अ	[6 वर्ण]	–	अंगूर	[शब्द]
आ + ँ + ख् + अ	[4 वर्ण]	–	आँख	[शब्द]
अ + त् + अ + :	[4 वर्ण]	–	अतः	[शब्द]
ज् + अ + ग् + अ + त्	[5 वर्ण]	–	जगत्[1]	[शब्द]
ज् + अ + ग् + अ + त् + अ	[6 वर्ण]	–	जगत	[शब्द]
प् + अ + र् + ई + क् + ष् + आ	[7 वर्ण]	–	परीक्षा[2]	[शब्द]
प् + अ + र् + इ + क् + ष् + आ	[7 वर्ण]	–	परिक्षा	[शब्द]

1. जगत् – संसार; जगत – कुँए का चबूतरा।
2. परीक्षा – इम्तिहान [Exam]; परिक्षा – कीचड़।

एक से अधिक वर्णों [अक्षरों] को जोड़ना 'वर्ण-विन्यास' कहलाता है और 'वर्ण-विन्यास' को ही 'शब्द' कहा जाता है।

जैसे–घर, हल, किताब आदि।

जब किसी शब्द के प्रत्येक अक्षर [वर्ण] को अलग-अलग लिखा जाता है, तो वह 'वर्ण-विच्छेद' कहलाता है।

जैसे–घर → घ् + अ + र् + अ; अंगूर → अ + ं + ग् + ऊ + र् + अ आदि।

1. जगत् – संसार

जगत – कुएँ का चबूतरा

2. परिक्षा – कीचड़

परीक्षा – इम्तिहान [Exam.]

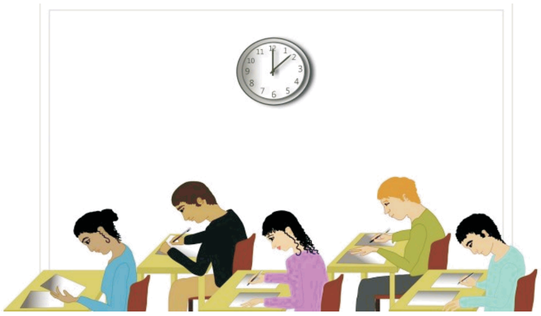

बिना मात्रा वाले शब्द 4

घ् + अ + र् + अ — **घर**

र् + अ + थ् + अ — **रथ**

ब् + अ + स् + अ — **बस**

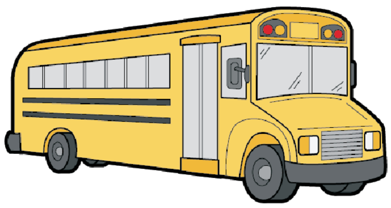

ह् + अ + ल् + अ — **हल**

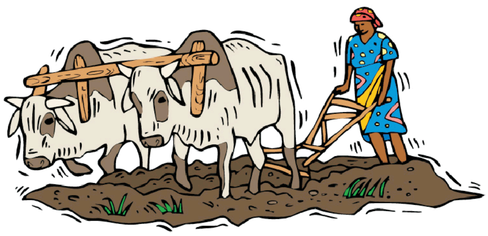

च् + अ + ल् + अ — **चल**

प् + अ + र् + अ — **पर**

क् + अ + म् + अ + ल् + अ — **कमल**

प् + अ + व् + अ + न् + अ — पवन

न् + अ + म् + अ + न् + अ — नमन

अ + ज् + अ + ग् + अ + र् + अ — अजगर

न् + अ + ट् + अ + ख् + अ + ट् + अ — नटखट

प् + अ + न् + अ + घ् + अ + ट् + अ — पनघट

च् + अ + ढ़ — चढ़

प् + अ + ढ़ — पढ़

स् + अ + ड़ — सड़

ग् + अ + ड़

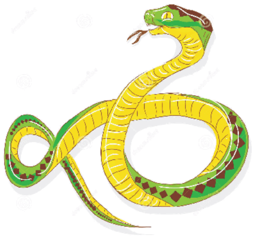

अभ्यास

1. वर्ण-विच्छेद करें (अक्षरों को अलग-अलग करें)–

   (*i*) यह — य् + अ + ह् + अ

   (*ii*) नल —

   (*iii*) बहन —

   (*iv*) सरल —

   (*v*) धड़कन —

   (*vi*) अलग —

2. **वर्ण-विन्यास करें (अक्षरों को जोड़कर शब्द लिखें)–**

(*i*) क् + अ + ल् + अ + म् + अ – **कलम**

(*ii*) ह् + अ + ल् + अ + च् + अ + ल् + अ –

(*iii*) प् + अ + क् + अ + ड़ –

(*iv*) व् + अ + ह् + अ –

(*v*) द् + अ + श् + अ + र् + अ + थ् + अ –

(*vi*) न् + अ + ल् + अ –

3. **खाली जगह को भरें–**

(*i*) अ + म् + अ + र् + अ – अमर

(*ii*) ध् + अ + र् + ... – धर

(*iii*) .... + स् + ... – इस

(*iv*) ट् + अ + ... + अ + ... + अ + म् + अ – टमटम

(*v*) भ् + अ + ... + अ + न् + ... – भवन

‘आ’ की मात्रा वाले शब्द

‘आ’ → ा [‘आ’कार] – क् + आ → का

व् + आ + न् + अ + र् + अ – **वानर**

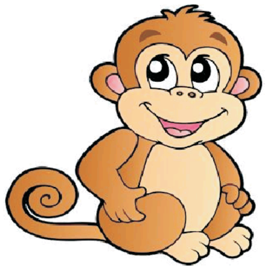

ब् + आ + द् + अ – **बाद**

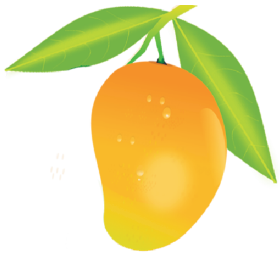

आ + म् + अ – **आम**

र् + आ + म् + अ – **राम**

क् + आ + ल् + अ – **काल**

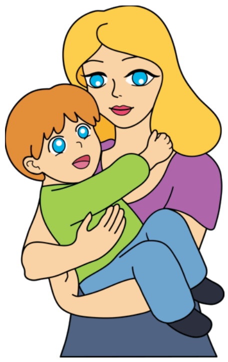

म् + आ + त् + आ – **माता**

प् + अ + ढ़ + न् + आ – **पढ़ना**

ज् + आ + न् + आ — **जाना**

ब् + आ + द् + अ + ल् + अ — **बादल**

अभ्यास

1. वर्ण-विच्छेद करें (अक्षरों को अलग-अलग करें)–

(*i*) महान् — म् + अ + ह् + आ + न्

(*ii*) कारण —

(*iii*) बाहर —

(*iv*) लड़का —

(*v*) आकार —

2. वर्ण-विन्यास करें (अक्षरों को जोड़कर शब्द लिखें)–

(*i*) क् + अ + ह् + अ + न् + आ — कहना

(*ii*) क् + आ + म् + अ —

(*iii*) क् + आ + म् + अ + न् + आ —

(*iv*) ज् + आ + ल् + अ —

3. खाली जगह को भरकर लिखें–

(*i*) र् + आ + म् + अ — राम

(*ii*) र् + ... + व् + अ + ... + अ – रावण

(*iii*) भ् + आ + ... + अ + न् + ... – भावना

(*iv*) .... + आ + ... + आ – माला

(*v*) आ + ... + अ + ... + अ – आलय

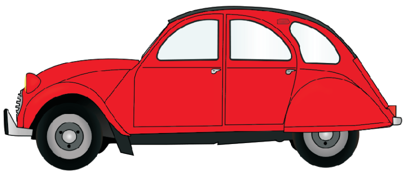

(*vi*) क् + ... + र् + अ – कार

'इ' और 'ई' की मात्रा वाले शब्द 6

'इ' → ि ['इ'कार] – क् + इ → कि

'ई' → ी ['ई'कार] – क् + ई → की

य् + अ + द् + इ – **यदि**

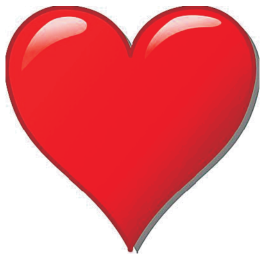

द् + इ + ल् + अ – **दिल**

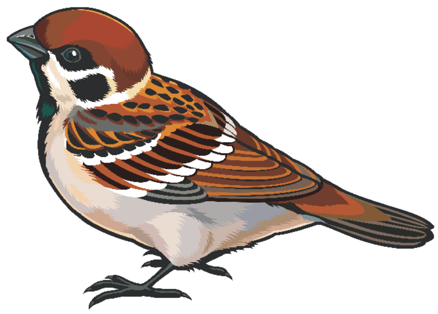

च् + इ + ड़् + इ + य् + आ – **चिड़िया**

प् + अ + ह् + इ + य् + आ – **पहिया**

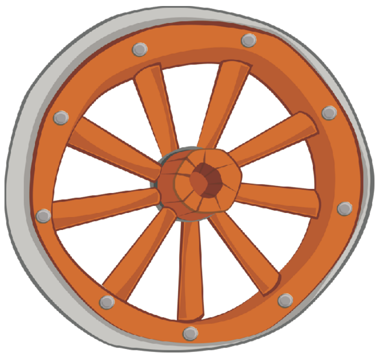

स् + ई + त् + आ – **सीता**

ग् + ई + त् + आ	–	गीता
ल् + अ + ड़् + क् + ई	–	लड़की
ब् + अ + क् + अ + र् + ई	–	बकरी

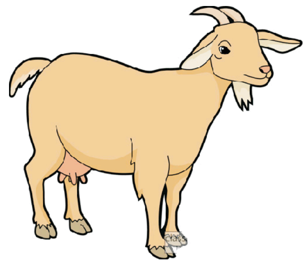

अभ्यास

1. वर्ण-विच्छेद करें (अक्षरों को अलग-अलग करें)–

(*i*) इमली – इ + म् + अ + ल् + ई

(*ii*) लकड़ी –

(*iii*) हिमालय –

(*iv*) मिलना –

(*v*) तीर –

2. वर्ण-विन्यास करें (अक्षरों को जोड़कर शब्द लिखें)–

(*i*) क् + इ + स् + आ + न् + अ – किसान

(*ii*) स् + अ + म् + ई + प् + अ –

(*iii*) व् + ई + र् + अ –

(*iv*) व् + इ + ज् + अ + य् + अ –

(*v*) न् + इ + य् + अ + म् + अ –

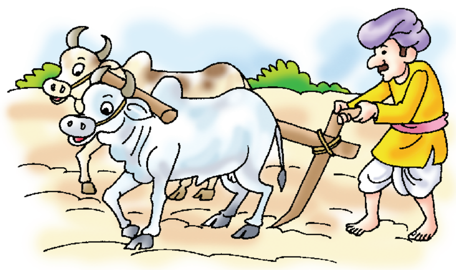

3. खाली जगह को भरकर लिखें–

(*i*) क् + इ + त् + अ + न् + आ – कितना

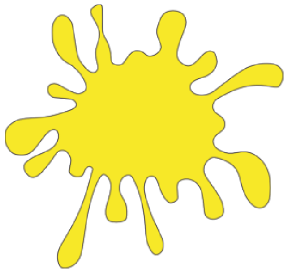

(*ii*) प् + ... + ल् + आ – पीला

(*iii*) न् + ... + ल् + ... – नीला

(*iv*) अ + ... + अ + न् + ... – अपनी

(*v*) .... + इ + ध् + आ + त् + ... – विधाता

(*vi*) म् + अ + छ् + ... + ल् + ... – मछली

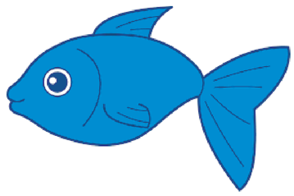

'उ' और 'ऊ' की मात्रा वाले शब्द 7

'उ' → ु ['उ'कार] – क् + उ → कु

'ऊ' → ू ['ऊ'कार] – क् + ऊ → कू

र् + उ → रु

र् + ऊ → रू

ग् + उ + र् + उ – गुरु

त् + उ + म् + अ – तुम

च् + उ + ह् + इ + य् + आ – चुहिया

त् + उ + ल् + अ + स् + ई – तुलसी

ब् + उ + र् + आ – बुरा

ग् + उ + ल् + आ + ब् + अ – गुलाब

ख् + उ + श् + अ – खुश

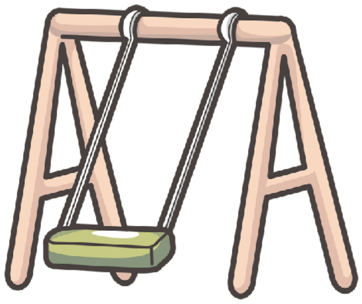

झ् + ऊ + ल् + आ – झूला

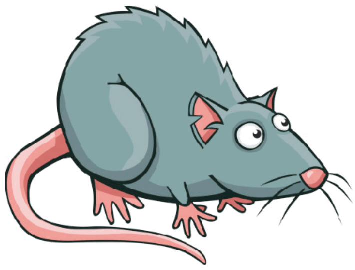

च् + ऊ + ह् + आ – चूहा

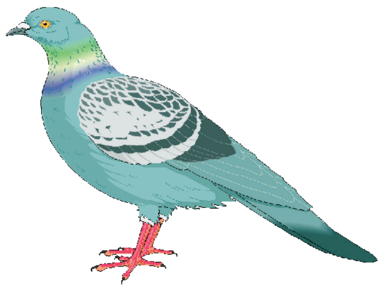

क् + अ + ब् + ऊ + त् + अ + र् + अ – कबूतर

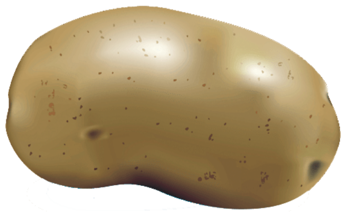

आ + ल् + ऊ – आलू

ज् + ऊ + त् + आ – जूता

अभ्यास

1. **वर्ण-विच्छेद करें–**

   (i) शुभ – श् + उ + भ् + अ

   (ii) सुराही –

   (iii) मुख –

   (iv) नाखून –

   (v) खजूर –

2. **वर्ण-विन्यास करें–**

   (i) क् + उ + म् + आ + र् + अ – कुमार

   (ii) प् + उ + ड़् + इ + य् + आ –

   (iii) प् + अ + श् + उ –

   (iv) भ् + ऊ + ल् + अ –

   (v) अ + म् + अ + र् + ऊ + द् + अ –

   (vi) ज् + आ + द् + ऊ + ग् + अ + र् + अ –

3. **खाली जगह को भरकर लिखें–**

   (i) भ् + आ + ल् + ऊ – भालू

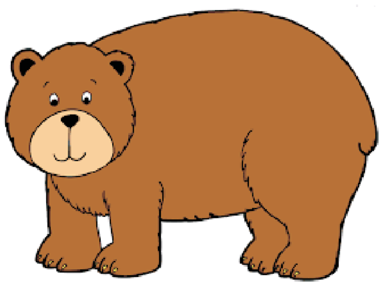

(*ii*) स् + ... + ख् + अ – सुख

(*iii*) स् + ... + र् + अ + ज् + अ – सूरज

(*iv*) स् + ... + ब् + अ + ह् + अ – सुबह

(*v*) र् + ऊ + ... + अ – रूप

(*vi*) ध् + ... + ल् + ... – धूल

‘ऋ’ और ‘ॠ’ की मात्रा वाले शब्द 8

‘ऋ’ → ृ [‘ऋ’कार] – क् + ऋ → कृ

‘ॠ’ → ॄ [‘ॠ’कार] – क् + ॠ → कॄ

ह् + ऋ → हृ

क् + ऋ + प् + आ – कृपा

ग् + ऋ + ह् + अ – गृह

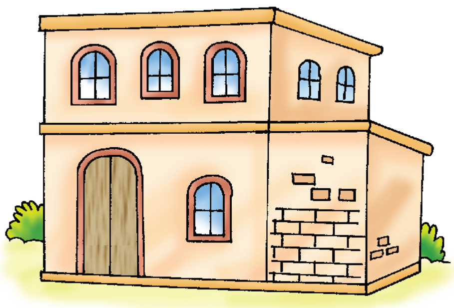

घ् + ऋ + ण् + आ – घृणा

प् + इ + त् + ॠ + ण् + अ – पितॄण[1]

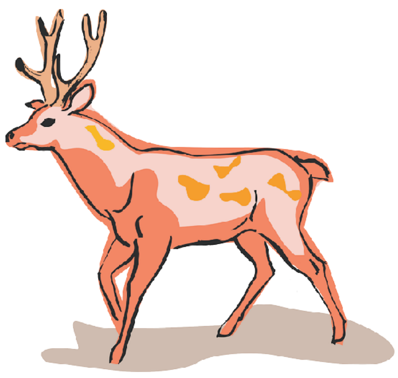

घ् + ऋ + त् + अ – घृत

श् + ऋ + ग् + आ + आ + ल् + अ – शृगाल / शॄगाल

म् + ऋ + ग् + अ – मृग

1. पितृ + ऋण; पिता का ऋण [कर्ज]

अभ्यास

1. **वर्ण-विच्छेद करें–**

(i) कृषक – क् + ऋ + ष् + अ + क् + अ

(ii) अमृत –

(iii) नृप –

(iv) कृषि –

(v) मातृण[1] –

2. **वर्ण-विन्यास करें–**

(i) ह् + ऋ + त् + अ – हृत

(ii) म् + ऋ + त् + अ –

(iii) न् + ऋ + प् + अ + त् + इ –

(iv) ध् + आ + त् + ॠ + ण् + अ –

(v) त् + ऋ + ण् + अ –

3. **खाली जगह को भरकर लिखें–**

(i) द् + ऋ + ढ़ – दृढ़

1. मातृ + ऋण [माता का ऋण (कर्ज)]

(*ii*) ऋ + ष् + ... – ऋषि

(*iii*) म् + ... + ण् + आ + ... + अ – मृणाल

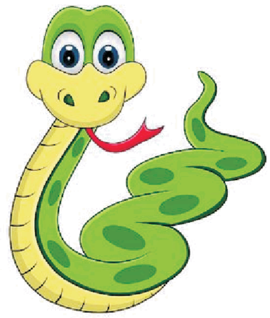

(*iv*) स् + ... + प् + अ – सृप

(*v*) त् + ... + ष् + ... – तृषा

‘ए’ और ‘ऐ’ की मात्रा वाले शब्द 9

‘ए’ → े [‘ए’कार] – क् + ए → के

‘ऐ’ → ै [‘ऐ’कार] – क् + ऐ → कै

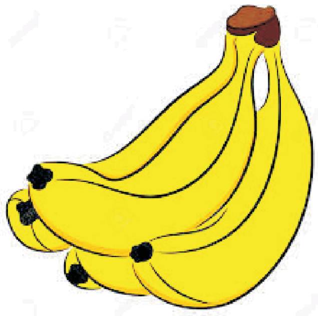

क् + ए + ल् + आ – **केला**

म् + ए + ल् + आ – **मेला**

स् + अ + ह् + ए + ल् + ई – **सहेली**

म् + ए + ह् + अ + न् + अ + त् + अ – **मेहनत**

म् + ऐ + ल् + आ — **मैला**

थ् + ऐ + ल् + आ — **थैला**

ह् + ए — **हे**

ह् + ऐ — **है**

ठ् + ए + ल् + आ — **ठेला**

स् + उ + ल् + ए + ख् + अ — **सुलेख**

स् + ऐ + न् + इ + क् + अ — **सैनिक**

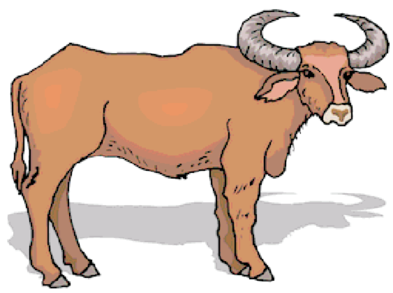

ब् + ऐ + ल् + अ — **बैल**

अभ्यास

1. **वर्ण-विच्छेद करें (अक्षरों को अलग-अलग करें)–**

   (*i*) गणेश – ग् + अ + ण् + ए + श् + अ

   (*ii*) मेज –

   (*iii*) रेल –

   (*iv*) जलेबी –

   (*v*) फैलाव –

   (*vi*) विषैला –

   (*vii*) पैर –

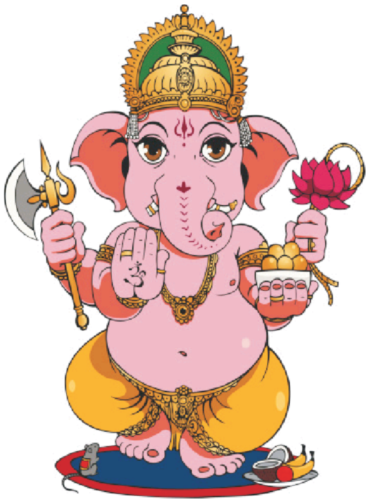

2. **वर्ण-विन्यास करें–**

   (*i*) म् + ए + र् + आ – मेरा

   (*ii*) ब् + ऐ + ठ् + अ + न् + आ –

   (*iii*) क् + ऐ + द् + अ –

   (*iv*) क् + ऐ + स् + ए –

   (*v*) न् + अ + र् + ए + श् + अ –

   (*vi*) अ + प् + अ + न् + ए –

3. खाली जगह को भरकर लिखें–

(*i*) ह् + ए + म् + अ – हेम

(*ii*) स् + ... + व् + आ – सेवा

(*iii*) क् + ... + न् + आ + र् + ... – किनारे

(*iv*) .... + न् + अ + ... + अ – ऐनक

(*v*) त् + ... + र् + आ + क् + ... – तैराक

(*vi*) श् + ... + ल् + अ – शैल

(*vii*) म् + ... + न् + आ – मैना

‘ओ’ और ‘औ’ की मात्रा वाले शब्द 10

‘ओ’ → ो [‘ओ’कार] – क् + ओ → को
‘औ’ → ौ [‘औ’कार] – क् + औ → कौ

ग् + ओ + प् + आ + ल् + अ – गोपाल

ख् + अ + र् + अ + ग् + ओ + श् + अ – खरगोश

त् + ओ + त् + आ – तोता

म् + ओ + र् + अ – मोर

ट् + ओ + क् + अ + र् + ई – टोकरी

द् + ओ + प् + अ + ह् + अ + र् + अ – दोपहर

प् + औ + ध् + आ – पौधा

न् + औ + क् + आ – नौका

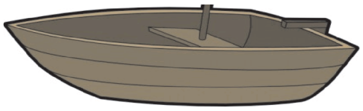

क् + औ + न् + अ – कौन

ग् + औ + र् + अ + व् + अ – गौरव

ग् + औ + र् + ई – गौरी

अभ्यास

1. **वर्ण-विच्छेद करें–**

(*i*) होली – ह् + ओ + ल् + ई

(*ii*) कोयल –

(*iii*) मौसा –

(*iv*) दौलत –

(*v*) खिलौना –

(*vi*) ढोलक –

(*vii*) पैर –

2. **वर्ण-विन्यास करें–**

(*i*) म् + ओ + ह् + अ + न् + अ – **मोहन**

(*ii*) घ् + ओ + ड़् + आ –

(*iii*) ध् + ओ + ब् + ई –

(*iv*) प् + अ + क् + औ + ड़् + ई –

(*v*) च् + औ + ब् + ई + स् + अ –

(*vi*) न् + औ + क् + अ + र् + ई –

3. **खाली जगह को भरकर लिखें–**

(*i*) च् + औ + क् + ई – चौकी

(*ii*) ग् + ... + श् + आ + ल् + आ – गोशाला

(*iii*) क् + ... + व् + आ – कौवा

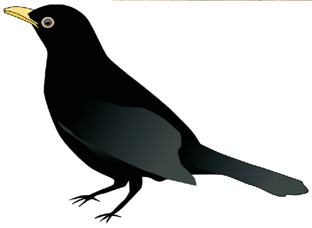

(*iv*) ह् + ... + स् + ... + ल् + आ – हौसला

(*v*) .... + औ + त् + अ + ... + अ – गौतम

(*vi*) ह् + अ + थ् + ... + ड़् + ... – हथौड़ा

(*vii*) त् + ... + ल् + इ + ... + आ – तौलिया

'ं', 'ँ' और ':' वाले शब्द 11

अ + ं + श् + अ – **अंश**

श् + ऋ + ं + ग् + आ + र् + अ – **शृंगार**

ह् + अ + ं + स् + अ – **हंस**

क् + अ + ं + स् + अ – **कंस**

व् + अ + ं + श् + ई – **वंशी**

ज् + अ + ं + ग् + अ + ल् + अ – **जंगल**

क् + अ + र् + ए + ं – **करें**

ह् + अ + ँ + स् + अ + न् + आ – **हँसना**

आ + ँ + ग् + अ + न् + अ – **आँगन**

आ + ँ + स् + ऊ — **आँसू**

य् + अ + ह् + आ + ँ — **यहाँ**

अ + त् + अ + : — **अतः**

प् + उ + न् + अ + : — **पुनः**

न् + अ + म् + अ + : — **नमः**

अभ्यास

1. **वर्ण-विच्छेद करें–**

(*i*) हैं — ह् + ऐ + ं

(*ii*) मैं —

(*iii*) कहीं —

(*iv*) कहाँ —

(*v*) ऊँट —

(*vi*) दुःख —

(*vii*) शनैः —

2. वर्णविन्यास करें–

(*i*) क् + अ + ं + ग् + अ + न् + अ – कंगन

(*ii*) अ + ं + क् + उ + र् + अ –

(*iii*) ध् + उ + ं + ध् + अ –

(*iv*) ह् + अ + ँ + स् + ई –

(*v*) न् + अ + द् + इ + य् + आ + ँ –

(*vi*) न् + इ + : + स् + अ + ह् + आ + य् + अ –

(*vii*) म् + उ + ह् + उ + : –

3. खाली जगह को भरकर लिखें–

(*i*) अ + ं.... + श् + उ – अंशु

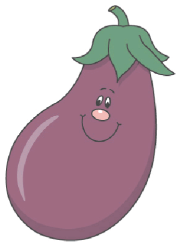

(*ii*) ब् + ऐ + ... + ग् + ... + न् + अ – बैंगन

(*iii*) द् + आ + ... + त् + अ – दाँत

(*iv*) क् + अ + ... +ग् + आ + र् + ... – कंगारू

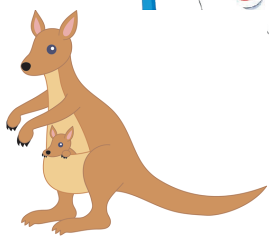

(*v*) ई + ... + ट् + अ – ईंट

(*vi*) म् + अ + ... + इ + ल् + आ + ए + ... – महिलाएँ

(*vii*) दु + ... + स् + अ + ह् + अ – दु:सह

(*viii*) न् + इ + ... + स् + अ + ं + क् + ओ + च् + अ – नि:संकोच

संयुक्त व्यञ्जन-वर्ण वाले शब्द 12

व्यञ्जन-वर्ण के दो रूप होते हैं–

(*i*) हलन्त-रूप तथा

(*ii*) संयुक्त रूप।

यहाँ दोनों रूप देकर उनके अन्तर को स्पष्ट किया जा रहा है। कोष्ठक से बाहर हलन्त-रूप तथा कोष्ठक के अन्दर उनके संयुक्त रूप हैं–

क्	(क्‍)	ख्	(ख्‍)	ग्	(ग्‍)	घ्	(घ्‍)	ङ्	
च्	(च्‍)	छ्		ज्	(ज्‍)	झ्	(झ्‍)	ञ्	(ञ्‍)
ट्		ठ्		ड्		ढ्		ण्	(ण्‍)
त्	(त्‍)	थ्	(थ्‍)	द्	(द्‍)	ध्	(ध्‍)	न्	(न्‍)
प्	(प्‍)	फ्	(फ्‍)	ब्	(ब्‍)	भ्	(भ्‍)	म्	(म्‍)
य्	(य्‍)	र्	(र्‍, ्र)	ल्	(ल्‍)	व्	(व्‍)		
श्	(श्‍, श्)	ष्	(ष्‍)	स्	(स्‍)	ह्	(ह्‍)		

एक से अधिक व्यञ्जन-वर्णों को जोड़कर 'संयुक्त व्यञ्जन-वर्ण' बनाये जाते हैं। संयुक्त-व्यञ्जन वर्ण में 'संयुक्त-रूप' लिखा जाता है और उनमें 'स्वर-वर्ण' जोड़ने पर 'हलन्त-चिह्न' (्) हटा दिया जाता है।

क् + ष्	– क्ष्	ञ् + च्	– ञ्च्
त् + र्	– त्र्	ह् + य्	– ह्य्
ज् + ञ्	– ज्ञ्	ह् + र्	– ह्र्
ङ् + क्	– ङ्क्	श् + र्	– श्र्
ङ् + ग्	– ङ्ग्	स् + त्	– स्त्
ङ् + ख्	– ङ्ख्	द् + य्	– द्य्
क् + त्	– क्त्, क्त्	ध् + य्	– ध्य्
ट् + ट्	– ट्ट्	द् + घ्	– द्घ्
ड् + ड	– ड्ड्	द् + ध्	– द्ध्
ह् + न्	– ह्न्	द् + द्	– द्द्
ह् + म्	– ह्म्	द् + म्	– द्म्
ट् + र्	– ट्र्	ल् + ल्	– ल्ल्
ड् + य्	– ड्य्	व् + य्	– व्य्
त् + त्	– त्त्	न् + द् + र्	– न्द्र्
त् + त् + व्	– त्त्व्	प् + र्	– प्र्
श् + व्	– श्व्/श्व्	स् + व्	– स्व्

इसी तरह अनेक 'संयुक्त व्यञ्जन-वर्ण' बना सकते हैं।

ह् + इ + न् + द् + ई – हिन्दी

य् + उ + क् + त् + अ – युक्त

स् + अ + ं + य् + उ + क् + त् + अ – संयुक्त

प् + र् + अ + क् + आ + श् + अ – प्रकाश

ब् + उ + द् + ध् + इ – बुद्धि

व् + इ + द् + य् + आ – विद्या

इ + न् + द् + र् + अ – इन्द्र

क् + र् + इ + य् + आ – क्रिया

ज् + ञ् + आ + न् + अ – ज्ञान

क् + ष् + अ + त् + र् + इ + य् + अ – क्षत्रिय

ब् + र् + अ + ह् + म् + आ – ब्रह्मा

च् + इ + ह् + न् + अ – चिह्न

र् + आ + ष् + ट् + र् + अ – राष्ट्र

श् + र् + ई + म् + आ + न् – श्रीमान्

अ + ङ् + क् + अ – अङ्क

व् + य् + अ + ञ् + ज् + अ + न् + अ – व्यञ्जन

अभ्यास

1. **वर्ण-विच्छेद करें–**

   (*i*) लक्ष्मी – ल् + अ + क् + ष् + म् + ई

   (*ii*) अभ्यास –

   (*iii*) तल्लीन –

   (*iv*) हड्डी –

   (*v*) व्यस्त –

   (*vi*) विच्छेद –

   (*vii*) अश्‍व/अश्व –

   (*viii*) ईश्‍वर/ईश्वर –

2. **वर्ण-विन्यास करें–**

   (*i*) व् + इ + न् + य् + आ + स् + अ – विन्यास

   (*ii*) ह् + र् + अ + स् + व् + अ –

   (*iii*) ध् + य् + आ + न् + अ –

   (*iv*) श् + उ + द् + ध् + अ –

   (*v*) प् + ऋ + थ् + व् + ई –

(vi) स् + अ + न् + ध् + इ —

(vii) श् + अ + ब् + द् + अ —

3. रिक्त [खाली] स्थान को भरें–

(i) र् + इ + क् + त् + अ — रिक्त

(ii) स् + ... + आ + न् + ... — स्थान

(iii) .... + य् + अ + व् + अ + ह् + आ + र् + अ — व्यवहार

(iv) प् + ... + इ + य् + अ — प्रिय

(v) स् + अ + ं + ख् + य् + आ — संख्या

(vi) प् + अ + ... + च् + अ + म् + ई — पञ्चमी

(vii) म् + ... + ह् + अ + ... + त् + व् + अ — महत्त्व

(viii) श् + ... + ङ् + ग् + आ + र् + ... — शृङ्गार

(ix) श् + अ + ... + द् + अ — शब्द

(x) .... + आ + ब् + द् + ... — शाब्द[1]

[1] शाब्द – शब्दों से सम्बन्धित

'र्' प्रयोग वाले शब्द 13

'र्' का प्रयोग तीन रूपों में किया जाता है–

(*i*) र्‍ (रेफ), (*ii*) ्र तथा (*iii*) ‍्र ।

'र्‍' (रेफ) का प्रयोग तब होता है, जब 'र्' के बाद कोई व्यञ्जन-वर्ण आता है; यह 'र्‍' चिह्न 'र्' के तुरन्त बाद आने वाले व्यञ्जन-वर्ण या व्यञ्जन-वर्ण के परवर्ती स्वर-वर्ण पर प्रयुक्त होता है–

व् + अ + र् + ण् + अ – वर्ण

ध् + अ + र् + म् + अ – धर्म

ध् + आ + र् + म् + इ + क् + अ – धार्मिक

आ + द् + अ + र् + श् + अ – आदर्श

प् + अ + र् + व् + अ – पर्व

'्र' – 'र्' के इस रूप का प्रयोग 'टवर्ग' [ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्] को छोड़कर किसी भी व्यञ्जन-वर्ण के बाद 'र्' आने पर किया जाता है–

प् + र् + अ + क् + आ + श् + अ – प्रकाश

व् + अ + क् + र् + अ – वक्र

क् + र् + इ + य् + आ — क्रिया

श् + र् + ई — श्री

‘ ्र ’ – ‘र्’ के इस रूप का प्रयोग सदैव ‘टवर्ग’ [ट्, ठ्, ड्, ढ्] में ही होता है; जब ‘र्’ इन वर्णों के बाद आता है, तभी यह रूप प्रयुक्त होता है।

र् + आ + ष् + ट् + र् + अ — राष्ट्र

ढ् + र् + अ + ल् + ओ + प् + अ — ढ्रलोप

अभ्यास

1. वर्ण-विच्छेद करें–

(*i*) वर्णविच्छेद – व् + अ + र् + ण् + अ + व् + इ + च् + छ् + ए + द् + अ

(*ii*) प्रयत्न –

(*iii*) शर्म –

(*iv*) कर्म –

(*v*) उष्ट्र –

2. वर्ण-विन्यास करें–

(*i*) ग् + र् + आ + ह् + अ + क् + अ – ग्राहक

(*ii*) स् + प् + अ + र् + ध् + आ –

(*iii*) ह् + र् + आ + स् + अ –

(*iv*) र् + आ + ष् + ट् + र् + इ + य् + अ –

(*v*) ध् + ऐ + र् + य् + अ –

(*vi*) म् + ऊ + र् + ख् + अ + त् + आ –

3. रिक्त-स्थान को भरें–

(*i*) ह् + अ + र् + ष् + अ – हर्ष

(*ii*) आ + श् + ई + ... + व् + आ + द् + अ – आशीर्वाद

(*iii*) प् + ... + अ + य् + ... + स् + अ – प्रयास

(*iv*) ड् + ... + आ + म् + आ – ड्रामा

(*v*) .... + र् + आ + इ + ... + अ + र् + अ – ड्राइवर

(*vi*) .... + र् + अ + ... + इ + द् + ... + अ – प्रसिद्ध

लिङ्ग और वचन 14

जाति [पहचान, चिह्न] को 'लिङ्ग' कहा जाता है। हिन्दी में 'लिङ्ग' दो प्रकार के होते हैं–

(*i*) पुँल्लिङ्ग (*ii*) स्त्रीलिङ्ग

पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
लड़का जाता है।	लड़की जाती है।
छात्र पढ़ता है।	छात्रा पढ़ती है।
घोड़ा दौड़ता है।	घोड़ी दौड़ती है।
[1]शिक्षक पढ़ाते हैं।	शिक्षिका पढ़ाती हैं।
बैल चरता है।	गाय चरती है।
राम जाता है।	सीता जाती है।
ग्रन्थ अच्छा है।	पुस्तक अच्छी है।

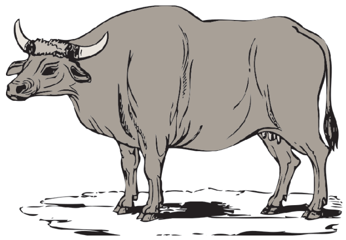

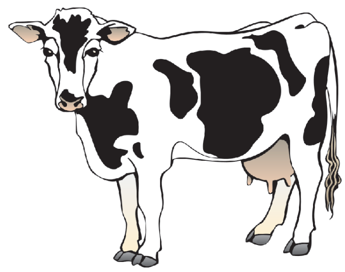

रेखाङ्कित शब्दों को देखने से पता चलता है कि जो शब्द 'पुरुष' [लड़का] जाति का बोध [ज्ञान] कराता है, उसे 'पुँल्लिङ्ग' कहा जाता है और जो शब्द 'स्त्री' [लड़की] जाति का बोध कराता है, वह 'स्त्रीलिङ्ग' कहलाता है।

[1] 'शिक्षक' एवम् 'शिक्षिका' एकवचन में है, किन्तु सम्मान देने के लिए यहाँ बहुवचन में प्रयोग हुआ है।

संख्या [गिनती] को **'वचन'** कहते हैं। हिन्दी में 'वचन' दो प्रकार के होते हैं–

(*i*) **एकवचन [एक संख्या]**

(*ii*) **बहुवचन [एक से अधिक संख्या]**

एकवचन

लड़का पढ़ता है।

बहुवचन

लड़के पढ़ते हैं।

लड़की जाती है।

लड़कियाँ जाती हैं।

एक हाथी दौड़ता है।

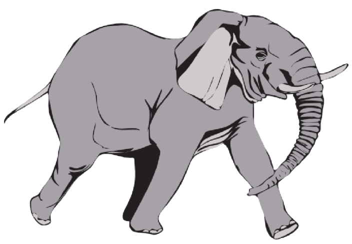

दो हाथी दौड़ते हैं।

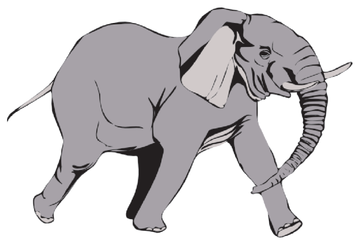
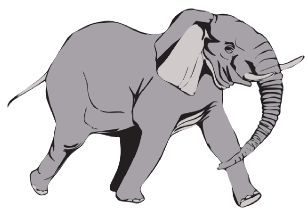

रेखाङ्कित शब्दों को देखने से पता चलता है कि जो शब्द एक संख्या का बोध [ज्ञान] कराता है, वह **'एकवचन'** कहलाता है और एक से अधिक संख्या बताने वाला शब्द **'बहुवचन'** कहलाता है।

अभ्यास

1. 'लिङ्ग' किसे कहते हैं?
2. हिन्दी में 'लिङ्ग' कितने प्रकार के होते हैं? उनका नाम लिखें।
3. 'वचन' किसको कहते हैं?
4. 'वचन' कितने प्रकार के होते हैं? उनका नाम लिखें।
5. रेखाङ्कित शब्दों का लिङ्ग बताएँ–

   (*i*) छात्र विद्यालय में पढ़ते हैं। ....

   (*ii*) फल मीठा है। ....

   (*iii*) शिक्षिकाएँ पढ़ाती हैं। ....

   (*iv*) नदी बहती है। ....

   (*v*) मयूर नाचते हैं। ....

6. रेखाङ्कित शब्दों का वचन बताएँ–

   (*i*) वृक्ष से पत्ते गिरते हैं। ....

   (*ii*) बाजार से महिला आ रही थी। ....

   (*iii*) आप कब आएँगे? ....

   (*iv*) वहाँ छात्राएँ पढ़ती थीं। ....

   (*v*) आकाश में पक्षी उड़ता है। ....

फिर से चूहा बन जाओ 15

एक वन में 'महातपा' नाम का मुनि रहता था। एक बार एक कौवे की चोंच से घायल चूहे का बच्चा मुनि के सामने गिर पड़ा। मुनि को दया आ गयी। उसने चूहे के बच्चे को अपने ही आश्रम में दयापूर्वक अन्न-नीवार आदि खिलाकर पाला-पोसा।

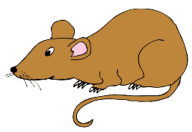

कुछ दिनों के बाद एक बिलाव उस चूहे को खाने के लिए दौड़ा। वह चूहा मुनि की गोद में जाकर बैठ गया। मुनि ने चूहे को कहा–'तुम भी बिलाव बन जाओ।' वह चूहा बिलाव बन गया। एक दिन उस बिलाव को खाने के लिए कुत्ता दौड़ा। बिलाव फिर मुनि की गोद में जाकर छिप गया। मुनि ने अपने तपोबल से उस बिलाव को कुत्ता बना दिया। एक बार उस कुत्ते को खाने के लिए बाघ दौड़ा। वह कुत्ता भागकर मुनि के पास चला गया। मुनि ने उसी तरह कुत्ते को बाघ बना दिया।

एक दिन वह बाघ उस मुनि को ही खाने के लिए दौड़ा, तो मुनि ने उस बाघ को कहा–'तुम फिर से चूहा बन जाओ।' इस प्रकार वह बाघ फिर से चूहा बन गया।

['पञ्चतन्त्रम्' ग्रन्थ से]

हिमालय [कविता] 16

–सोहनलाल द्विवेदी

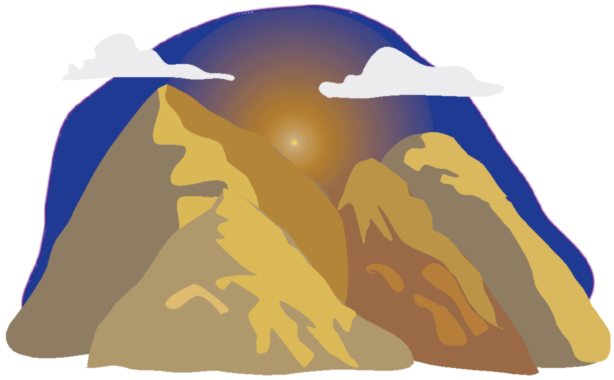

खड़ा हिमालय बता रहा है,
डरो न आँधी-पानी में।
खड़े रहो तुम अविचल होकर,
सब संकट-तूफानों में।

डिगो न अपने प्रण से तो तुम,
सब कुछ पा सकते हो प्यारे।
तुम भी ऊँचे उठ सकते हो,
छू सकते हो नभ के तारे।।

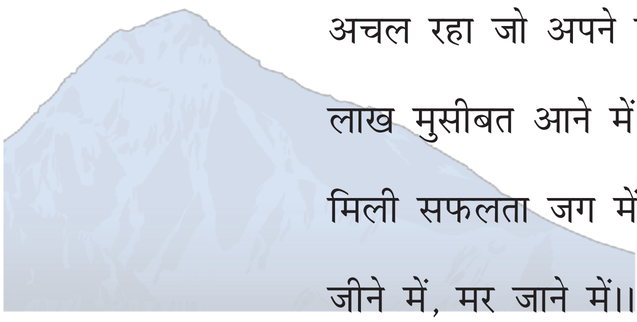

अचल रहा जो अपने पथ पर,
लाख मुसीबत आने में।
मिली सफलता जग में उसको,
जीने में, मर जाने में।।